This question paper contains 8 printed pages]

HPAS (Main)—2012

HINDI LITERATURE

Paper II

Time : 3 *Hours* *Maximum Marks :* 150

Note :— कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर लिखने हैं। प्रश्न संख्या 1 अनिवार्य है। **सभी** प्रश्नों के अंक समान हैं।

1. निम्नलिखित अवतरणों की व्याख्या कीजिए :

(क) (*i*) पीछैं लागा जाइ था, लोक वेद के साथि।

आगैं थैं सतगुर मिल्या, दीपक दीया हाथि॥

(*ii*) देखौ कर्म कबीर का, कछु पूरब जनम का लेख।

जाका महल न मुनि लहैं, सो दोसत किया अलेख॥

अथवा

आयो घोष बड़ो व्योपारी।

लादि खेप गुन ज्ञान जोग की ब्रज में आय उतारी।

फाटक दैकर हाटक मांगत भोरै निपट सु धारी।

धुर ही तैं खोटो खायो है लयो फिरत सिर भारी।

P.T.O.

इनके कहे कौन डहकावैं ऐसी कौन अजानी।

अपनो दूध छाँडि को पीवैं खार कूप को पानी।

ऊधो जाहु सवार यहाँ तें बेगि गहरु जनि लावौ।

मुँह माँग्यो पैही सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ॥

(ख) मुझ भाग्यहीन की तू सम्बल

युग वर्ष बाद जब हुई विकल,

दु:ख ही जीवन की कथा रही

क्या कहूँ आज, जो नहीं कही!

हो इसी कर्म पर वज्रपात

यदि धर्म, रहे नत सदा माथ

इस पथ पर, मेरे कार्य सकल

हों भ्रष्ट शीत के-से शतदल!

कन्ये, गत कर्मों का अर्पण

कर, करता मैं तेरा दर्पण!

अथवा

अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे
उठाने ही होंगे।
तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब।
पहुँचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार
तब कहीं देखने मिलेंगी बाँहें
जिसमें कि प्रतिपल काँपता रहता
अरुण कमल एक
ले जाने उसको धँसना ही होगा
झील के हिम-शीत सुनील जल में
चाँद उग आया है
गलियों की आकाशी लम्बी-सी चीर में
तिरछी है किरनों की मार
उस नीम पर
जिसके कि नीचे

मिट्टी के गोल चबूतरे पर, नीली

चाँदनी में कोई दिया सुनहला

जलता है मानो कि स्वप्न ही साक्षात

अदृश्य साकार।

(ग) मुझमें और आपमें अन्तर इतना ही है कि मैं जो कुछ मानता हूँ, उस पर चलता हूँ। आप लोग मानते कुछ हैं, करते कुछ हैं। धन को आप किसी अन्याय से बराबर फैला सकते हैं। लेकिन बुद्धि को, चरित्र को और रूप को, प्रतिभा को और बल को बराबर फैलाना तो आपकी शक्ति के बाहर है। छोटे बड़े का भेद केवल धन से ही तो नहीं होता। मैंने बड़े-बड़े धन-कुबेरों को भिक्षुकों के सामने घुटने टेकते देखा है, और आपने भी देखा होगा। रूप की चौखट पर बड़े-बड़े महीप नाक रगड़ते हैं। क्या यह सामाजिक विषमता नहीं है ? आप रूस की मिसाल

देंगे। वहाँ इसके सिवाय और क्या है कि मिल के मालिक ने राजकर्मचारी का रूप ले लिया है। बुद्धि तब भी राज करती थी, अब भी करती है और हमेशा करेगी।

अथवा

''मेरे उस सरल हृदय में उत्कट इच्छा थी कि कोई भी सुंदर मन मेरा साथी हो। प्रत्येक नवीन परिचय में उत्सुकता थी और उसके लिए मन में सर्वस्व लुटा देने की सन्नद्धता थी; परंतु संसार—कठोर संसार ने सिखा दिया है कि तुम्हें परखना होगा। समझदारी आने पर यौवन चला जाता है—जब तक माला गूँथी जाती है, तब तक फूल कुम्हला जाते हैं। जिससे मिलने के संभार की इतनी धूमधाम, सजावट, बनावट होती है, उसके आने तक, मनुष्य अपने हृदय को सुंदर और उपयुक्त नहीं बनाये रह सकता। मनुष्य की चंचल स्थिति तब तक श्यामल कोमल हृदय को

मरुभूमि बना देती है। यही तो विषमता है। मैं—अविश्वास, कूटचक्र और छलनाओं का कंकाल, कठोरताओं का केंद्र! आह! तो इस विश्व में मेरा कोई सुहृद् नहीं ? है—मेरा संकल्प! अब मेरा आत्माभिमान ही मेरा मित्र है।''

अथवा

''धर्म संस्कृति का आदर्श नियम है, इसलिए धर्म की बुराइयाँ संस्कृति से पैदा होतीं, इसलिए संस्कृति बुरी है, यह केवल तर्कना-शक्ति का नट का तमाशा है। संस्कृति की बुराई अगर हमें देखनी है तो संस्कृति में स्पष्ट देखनी होगी, इस प्रकार दूर से सिद्ध नहीं करनी होगी। नहीं तो, कहीं अच्छा कुछ है ही नहीं, बुराई ही बुराई है, और यह हमारी अशांति भी तो उस बुराई में पैदा हुआ मनोविकार है, मानव बुरा होकर अच्छी बात सोच कैसे सकता है, ? आप अन्धकार दूर करना चाहें तो यही कर सकते हैं कि रोशनी जला दें, यह नहीं कर सकते कि अन्धकार का अँधियारापन मिटा दें।''

2. कबीर के 'युग' तथा 'युगबोध' पर विचार करते हुए कबीर-काव्य की प्रासंगिकता सिद्ध कीजिए।

3. ''सूरकृत 'भ्रमरगीत' निर्गुण भक्ति पर सगुण भक्ति की विजय का ताना-बाना है।'' सिद्ध कीजिए।

4. 'रामचरितमानस' तथा 'कवितावली' के आधार पर तुलसी की समन्वय-भावना का विवेचन कीजिए।

5. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की नाट्य-कला पर विचार करते हुए 'अंधेर-नगरी' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए।

6. 'गोदान' उपन्यास के आधार पर प्रेमचंद की उपन्यास-कला का मूल्यांकन कीजिए।

7. 'चंद्रगुप्त' नाटक के मंचन की समस्याओं एवं संभावनाओं पर विचार कीजिए।

8. ''वह एक और मन रहा राम का, जो न थका''—इस पंक्ति के संदर्भ में 'राम की शक्ति पूजा' के काव्य-सौन्दर्य का विवेचन कीजिए।

P.T.O.

9. 'अंधेरे में' कविता, मुक्तिबोध के आत्मसंघर्ष की कविता है।—इस कथन के संदर्भ में कविता का मूल्यांकन कीजिए।

10. 'शेखर : एक जीवनी' उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण करते हुए उपन्यासकार अज्ञेय की कथा-दृष्टि स्पष्ट कीजिए।

30×4=120